www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जनमानस का परिष्कार पर्व आयोजनों से

— श्रीराम शर्मा आचार्य

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

DEV SANSKRITI VISWAVIDHYALAYA
HARIDWAR, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

क्रमाङ्क-१५५

लेखक

श्रीराम शर्मा आचार्य

प्रकाशक एवं मुद्रक

युग निर्माण योजना,
गायत्री तपोभूमि, मथुरा

१९८१

मूल्य-

पच्चीस पैसा

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of
life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जनमानस का परिष्कार पर्व आयोजनों से

लोक शिक्षण के लिए जन-समूह को एकत्रित करके ही कम समय में अधिक लोगों में सुव्यवस्थित चेतना उत्पन्न की जा सकती है। पाठशालाओं में, व्यायामशालाओं में यही एकत्रीकरण की प्रक्रिया काम में लाई जाती है। धर्म-मञ्च से भी कथा-प्रवचनों द्वारा सर्वत्र सत्सङ्गों के विविध-विधि आयोजन होते रहते हैं। लोक-चेतना को शालीनता की दिशा में अग्रसर रखने के लिए यह प्रशिक्षण सदैव जारी रखना होता है। सामयिक आन्दोलनों का उद्देश्य तो थोड़े समय तक सभा सम्मेलन करने से पूरा हो जाता है, किन्तु गन्दगी की उत्पत्ति और उसकी स्वच्छता का क्रम तो सनातन है, उसे अनवरत रूप से जारी रखना होता है। स्नान, कपड़े धोना, कमरा

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बुहारना, मलविसर्जन जैसे कार्य तो दैनिक हैं उन्हें कभी विराम नहीं मिल सकता। गन्दगी हर घड़ी उत्पन्न होती हैं, तो उनका परिमार्जन भी नित्य नियम रहेगा। शरीर में निरन्तर गन्दगी होती है, उसे दूर करने के लिए रक्त-संचार और श्वास-प्रश्वास की प्रक्रिया निरन्तर जारी रहती है। इसमें अवरोध उत्पन्न होगा तो फिर बढ़ी हुई विषाक्तता मरण ही उत्पन्न करेगी।

न केवल मलीनता का निराकरण एक महती आवश्यकता है, वरन् श्रेष्ठता का संस्थापन और अभिवर्धन भी उतना ही अनिवार्य है। शरीर को आक्सीजन की आवश्यकता निरन्तर पड़ती है। साँस द्वारा उसकी हर घड़ी पूर्ति करनी पड़ती है। पेट को आहार देना पड़ता है। दीपक जलाना हो तो तेल जुटाना ही होगा, मरण-क्रम की भाँति प्रजनन भी चलना ही चाहिए, अन्यथा सृष्टि संतुलन कैसे रह सकेगा ? पाठशालाएँ कभी समाप्त नहीं होती। वर्तमान पीढ़ी जब तक शिक्षित हो पाती है तब तक नये बच्चों के लिए फिर प्रशिक्षण की नई आवश्यकता आ खड़ी होती है। फसलें बार-बार बोनी पड़ती

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हैं। पहला अनाज समाप्त हो जाने पर नया तो चाहिये ही इसके लिए कृषि कार्य निरन्तर जारी रहता है। पशुओं के दूध देने से लेकर कारखानों के उत्पादन तक का क्रम अनवरत है। लोक शिक्षण भी इसी स्तर की आवश्यकता है। प्रवाह नीचे की ओर बहता है। मन की प्रवृत्ति भी पतनोन्मुख है। ऊँचा उठाने के लिए रस्सी, बाल्टी, पम्प, ढेंकी, मोटर टंकी आदि का प्रबन्ध करना ही पड़ता है। प्रवृत्तियों को ऊँची रखने के लिए लोक शिक्षण से अभिप्राय साधनों का उपार्जन या व्यवहार कुशलता सिखाने वाली शिक्षा से नहीं वरन् उस ज्ञान चेतना से है, जो मानवी गरिमा को बनाये रहने के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ उत्पन्न करती है। इसे धर्म चेतना के नाम से जाना जाता है। इसमें प्रत्यक्ष, तात्कालिक सुविधा संवर्धन जैसा लाभ नहीं है, यदि होता तो लोग उसे ऐसे ही सहज चातुर्य से अपना लेते। आदर्शों को अपनाने से आत्म-सन्तोष, लोक-सम्मान, ईश्वरीय अनुग्रह, लोक हित जैसे परोक्ष लाभ तो मिलते ही हैं, पर आदर्शवादी को अपने ऊपर कई तरह के अंकुश लगाकर सुविधाओं में कटौती

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भी करनी पड़ती है। इससे उत्पन्न असंतोष को दूर करने के लिए आदर्शवादिता की गरिमा की—उसके दूरगामी परिणामों को समझने—समझाने का प्रबल प्रयत्न करना पड़ता है। यदि यह न किया जाय तो जनमानस में धर्म-चेतना बढ़ाना और बनाये रहना कठिन पड़ जायगा। उस प्रकार की उदासी छा जाने पर कोई सत्कर्मों में प्रवृत्त होने का साहस ही नहीं करेगा। पशुओं में कौन आदर्शवादी और कौन परमार्थ-परायण होता है? वे मात्र शरीर पोषण के लिए जीवित रहते हैं। मनुष्यों को भी यदि धर्म चेतना न मिले तो वे भी वन-मानुषों की तरह जीवित रह सकेंगे।

धर्म-चेतना और मानवी गरिमा को पर्यायवाची कह सकते हैं। उसे बनाये रखने और बढ़ाने की कितनी अधिक आवश्यकता है इस पर विचार करने से प्रतीत होता है कि उसे क्षुधा निवृत्ति के लिए साधन जुटाने की तरह प्राथमिकता दी जानी चाहिए। आदर्शवादिता—कर्तव्य परायणता; नीति निष्ठा, सच्चरित्रता, समाज-निष्ठा जैसी श्रेष्ठताएँ जितनी जीवन्त रहेंगी मनुष्य उतना सुसंस्कृत

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

और समाज उतना ही समुन्नत बनेगा। इस लक्ष्य को यदि ध्यान में रखा जा सकेगा तो धर्म-धारण को प्रखर बनाये रहने वाला लोक शिक्षण मनुष्य की सर्वोपरि आवश्यकता गिनी जायगी। उसके लिए प्रबन्ध और प्रयत्न करना उन सभी दूरदर्शियों का पवित्र कर्तव्य है जो इस संसार में सुख-शान्ति और प्रगति देखना चाहते हैं।

इस लोक-शिक्षण के लिए स्थायी व्यवस्था बनाये रखने के लिए दूरदर्शी पूर्वजों ने अत्यन्त महत्वपूर्ण परम्पराएँ स्थापित की हैं। पर्व त्यौहार इसी प्रयोजन के लिए बनाये गये हैं। उनके पीछे कथा-पुराणों का इतिहास जोड़ा गया है, साथ ही उनके मनाने का ढङ्ग-ढांचा ऐसा खड़ा किया है कि मानव-जीवन के लिए नितान्त आवश्यक अनेक दिशा-धाराओं के साथ उसे जुड़ा हुआ देखा जा सकता है। पूर्व त्यौहारों का वर्तमान प्रचलन उपेक्षा और अदूरदर्शिता से मर गया है। उनमें मिष्ठान, पकवान बनाने खाने और घिसी-पिटी चिन्ह पूजाएँ कर लेने--छुट्टी मना लेने--कपड़े बदल लेने जैसी छुट-पुट नवीनताओं के अतिरिक्त ऐसा कुछ नहीं दीखता।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पर्वों की परम्परा का प्रचलन करने वालों के सामने दूसरा ही दृष्टिकोण था। उनका वास्तविक स्वरूप स्थानीय धर्म-सम्मेलनों, धर्मानुष्ठानों जैसे सामूहिक समारोहों का सा था। सामाजिक सत्प्रवृत्तियों के विकास के लिए पर्वों को उसी रूप में मानने की परिपाटी प्रारम्भ करना आवश्यक है। इन्हें सामूहिक रूप से मनाया जाना चाहिए। सारा नगर उन्हें मिल-जुल कर मनाये, इसी को ध्यान में रख कर इनका विधान बनाया गया था। पर जहां वैसा न हो सके वहां गली मुहल्ले के--अथवा एक मन, विचार स्तर के लोग मिल कर उन्हें मना सकते हैं और छोटे से आयोजन के रूप में पूजाकृत्य करके उनमें सन्निहित प्रेरणाओं का लाभ ले सकते हैं। इतना भी न हो सके तो घर के सब लोग मिल-जुल कर घरेलू उत्सव के रूप में--संस्कार आयोजनों की तरह पर्वों को भी मना सकते हैं। मूल उद्देश्य उनसे प्रेरणा ग्रहण करना है।

आज मिष्ठान्न, पकवान, नये वस्त्र, अवकाश का दिन, छुट-पुट पूजा-पाठ जैसे चिन्ह पूजाएं त्यौहारों में होती रहती हैं। कई त्यौहारों पर महिलाएं व्रत, उपवास

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

करती हैं, अमुक देवी देवता को अमुक विधि-विधान से पूजती हैं। इन रिवाजों में जो अनैतिक अवांछनीय, खर्चीले न हों, उन्हें पुराने लोगों के सन्तोष के लिए किया भी जाता रह सकता है। मूल बात उस प्रेरणा को ग्रहण करने की है जिनके लिए उनका निर्माण हुआ था। यह पारिवारिक स्तर पर किया जा सकता है दो पर्व ऐसे हैं जो पारिवारिक स्तर पर संस्कारों की तरह मनाये जाते हैं। एक है जन्मदिवसोत्सव तथा दूसरा है विवाहदिवसोत्सव। जन्म दिन व्यक्तिगत चिन्तन एवं कर्तृत्व के परिष्कार एवं निर्माण के लिए है। इसको अकेले ही या परिजन मिलकर भी मना सकते हैं। विवाह-दिवसोत्सव दाम्पत्य के--गृहस्थाश्रम के आदर्शों को हृदयङ्गम करने के लिए है। इसे पति-पत्नी दोनों मिलकर एकान्त कक्ष में भी मना सकते हैं। अब तक की भूलों का विस्मरण और भविष्य में घनिष्ठता के निर्वाह का आश्वासन एक दूसरे को देकर भी उसे पूरा किया जा सकता है। छुट-पुट उपहारों का पुष्प, नैवेद्य जैसा आदान-प्रदान भी हो सकता है। विवाह के वर्षों के प्रतीक जितने दीपक पति-पत्नी स्वयं भी जला सकते हैं। दूसरों की जानकारी दिये

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बिना भी यह विवाहदिवसोत्सव हर साल होता रह सकता है। जन्म दिन एकाकी और विवाह दिन पति-पत्नी के सहयोग भर से मनाया जाता रह सकता है। अन्यों के सहयोग से यह दोनों उत्सव अधिक प्रभावशाली एवं उत्साह वर्धक होते हैं, इसमें संदेह नहीं पर परिस्थिति वश एक एकाकी रूप में भी मना सकते हैं। इनसे सम्बन्धित परामर्श, उद्बोधन का प्रवचन कोई भी व्यक्ति कर सकता है। इसके लिए कुशल वक्ता होने की आवश्यकता नहीं है। परिवार प्रशिक्षण का यह कार्य एक परिवार वाले दूसरों का करें तो यह और भी आकर्षक एवं उत्साहवर्धक रह सकता है।

अन्य पर्वों के बारे में ऐसी बात नहीं है। वे विशुद्ध सामदायिक हैं। उनकी संरचना ही इस प्रकार हुई है कि मिल-जुल कर सामूहिक धर्मानुष्ठान या स्नेह के रूप में ही उन्हें मनाया जा सकता है। बसंतोत्सव, होली, गंगा-दशहरा, गुरुपूर्णिमा, श्रावणी, विजयदशमी के समारोह हर जगह मनाये जाते हैं। इनमें से एक भी ऐसा नहीं है जिसे कोई अकेला व्यक्ति मना सके।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कुछ पर्व ऐसे भी हैं जो प्रान्तीय–क्षेत्रीय रूप में ही विशेषतया मनाये जाते हैं। हिमालय प्रदेश में मकर–संक्रांति की धूम रहती है। पंजाब में बैसाखी संक्रांति का बड़ा महत्व है। महाराष्ट्र में गणेशचतुर्थी की धूम देखते ही बनती है। ब्रज की होली का स्वरूप ही अनोखा है। इसी प्रकार विभिन्न प्रांतों में विभिन्न अवसरों पर विभिन्न प्रकार के पर्व त्यौहार होते हैं।

अवतारों, देवपुरुषों और महामानवों की जयन्तियां भी उनके अनुयायी समारोह पूर्वक मनाते हैं। रामनवमी कृष्णजन्माष्टमी, महावीर जयन्ती, नानक जयन्ती, गांधी जयन्ती आदि के आयोजन भी पर्व-त्यौहारों में गिने जा सकते हैं। यह भी सामूहिक रूप में मनाते हैं।

पूजा मन्त्र आवश्यक है अन्यथा परम्परा का निर्वाह न होने से लोगों के धर्मोत्साह का समाधान न हो सकेगा। बसन्त पर्व पर सरस्वती की, शिवरात्री पर शिव की आराधना का दिन है। उस दिन इन देवताओं का बड़ा चित्र एक बड़े मन्च पर सुसज्जा के साथ रखा जाय।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पूजा का समय नियत हो। ठीक उसी समय स्वास्ति-वाचन आदि मङ्गल-उच्चारण हों—सब लोगों के हाथ में अक्षत, पुष्प आदि रहें। उन्हें पूजा मन्च पर रखे चित्र के चरणों में श्रद्धांजलि के रूप में प्रस्तुत किया जाय। सामूहिक आरती, स्तवन आदि हों। थोड़ी उपस्थिति हो तो लोग खड़े होकर यह श्रद्धा—समर्पण स्वयं करें। भीड़ अधिक हो तो अक्षत पुष्प लोगों के हाथों तक पहुँचाने और वापिस लेने का कार्य सेवकों द्वारा कराया जा सकता है।

प्रसाद देने की आवश्यकता प्रतीत हो (१) सामान्य जल (२) गंगाजल (३) तुलसी पत्र (४) चन्दन की सुगन्ध (५) शक्कर—इन पाँच वस्तुओं का पंचामृत एक-एक चम्मच सब को दिया जा सकता है। कई लोग वितरण करें तो यह कार्य बिना किसी कठिनाई के हो सकता है और उपस्थित लोगों की धर्मश्रद्धा का परिपोषण हो सकता है। भविष्य में प्रसाद वितरण की यही व्यवस्था सर्वत्र चलनी चाहिए। अन्यथा मिष्ठान वितरण थोड़ा-थोड़ा होने पर भी समारोहों में बहुत पैसा खर्च हो जाता है उन समारोहों में सस्तेपन का

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

समान न रखा जाय तो जहाँ सम्पन्नता होगी वहीं प्रसाद वितरण हो सकेगा। सामान्य लोग उतना साधन न जुटा सकने के कारण उस परम्परा के निर्वाह से मुँह मोड़ लेंगे।

सभी पर्व त्योहारों की वह ही पद्धति होनी चाहिए ताकि लोग उसका अभ्यास रख सकें और हर समारोह में उपस्थित लोग मूक दर्शक की तरह नहीं वरन् सक्रिय भागीदार की तरह आदि से अन्त तक भाग ले सकें। भिन्नता इतनी रहे कि पर्व से सम्बन्धित देवता या महामानव का बड़ा चित्र बदला जाता रहे। जिससे सम्बन्धित पर्व हो उसकी प्रतिष्ठापना, पूजा मंच पर होती रहे। स्तवन गुणगान में भी अन्तर होगा। इन दो बातों के अतिरिक्त अन्य उपचार सभी पर्वों में एक जैसे रहेंगे।

हर पर्व का अपना इतिहास है और अपना विषय। उसकी प्राचीनता के साथ संगति मिलाते हुए लोक शिक्षण के लिए भाषण के विषय निर्धारित किये जाने चाहिए। विषयान्तर करने और संगति न बिठाने से ऐसे वातावरण में रहने वाली सहज जन-जिज्ञासा का समाधान न हो

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सकेगा। उस- वक्तृता की सभी बातें उपयोगी रहने पर भी इस एक ही कमी के कारण उसका आनन्द चला जायेगा। यह धर्म चर्चा इतनी दकियानूसी भी नहीं होनी चाहिए कि प्राचीन कथा-गाथा ही उसमें भरी रहे और आज की वैयक्तिक एवं सामाजिक समस्याओं पर प्रकाश डालने के लिए गुंजाएश ही न रहे। दोनों का समुचित समन्वय बनाये रहना ही इन अवसरों पर होने वाले प्रवचनों की विशेषता होनी चाहिए। भिन्न-भिन्न पर्व अवसरों पर यदि पृथक-पृथक स्तर के प्रकाश प्रशिक्षण मिलते रहें तो उन्हें पुस्तक के पाठों—अध्यायों या कक्षाओं की तरह ही एक दूसरे का पूरक समझा जा सकता है।

वसन्त पर्व शिक्षा और कला की देवी सरस्वती का जन्म दिन है। होली में स्वच्छता और सामूहिक श्रमदान की प्रेरणा है। गंगा दशहरा में गंगा जैसी पवित्रता धारण करने तथा कृषि और प्राणियों की आवश्यकता के लिए जलका प्रबन्ध करने का संकेत है। गुरु पूर्णिमा विशुद्ध रूप में अनुशासन का पर्व है। श्रावणी हरीतिमा के

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सम्बर्धन का—परस्पर स्नेह बन्धनों से बंध कर सर्वतोमुखी सुरक्षा व्यवस्था करने का—यज्ञोपवीत में सन्निहित नवगुणों के सम्बर्धन का—पापों के प्रायश्चित्य जैसे अति महत्वपूर्ण संकेत हैं। विजयादशमी समर्थता में सम्बर्धन का, संगठित शक्ति के विकास का—अनीति के विरुद्ध संघर्ष का उद्‌बोधन है। दीपावली के साथ सद्‌ज्ञान प्रसार के विस्तार कर दीपकों, के अनुकरण का—अर्थव्यवस्था के साथ दैवी प्रवृत्तियों के समावेश की शिक्षा है। इसी प्रकार अवतारों और महामनों के संस्मरणों एवं उद्‌बोधनों में से भी अनेकों ऐसे हैं, जो प्राचीन काल की तरह आज भी नितान्त सामयिक प्रेरणाप्रद एवं समाधान कारक हैं इन तथ्यों पर ध्यान रखते हुए प्राचीन और अर्वाचीन का समन्वय कर सकना किसी विचारशील के लिए कुछ भी कठिन नहीं होना चाहिए।

इन आयोजनों में मात्र भाषण रखने से भी काम नहीं चलेगा। स्वल्प शिक्षित और अविकसित लोगों के लिए संगीत ही ऐसा विषय है जिसके सहारे मनोरंजन के साथ-साथ विषयों को हृदयंगम कराने की सुविधा रह

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सकती है। शिक्षितों और विकसित स्तर के लोगों के लिए भी संगीत की स्वर लहरी और भाव प्रेरणा कम आकर्षक नहीं होती। अस्तु, इन आयोजनों में सहगान—कीर्तन-भजन-गायन आदि की व्यवस्था भी भाषणों की तरह ही रखी जानी चाहिये।

विभिन्न धर्मों के पर्वोत्सव अलग-अलग हैं किन्तु प्रेरणा की दृष्टि से सभी में ऐसे तत्व मौजूद हैं जो एक ही लक्ष्य पर एकत्रित होते हैं। उन्हें ध्यान में रखा जाय और प्रधानता दी जाय तो एक धर्म दूसरे धर्मावलम्बियों के लिये भी समान रूप से प्रेरणाप्रद हो सकता है। दीपावली न्यायोचित रीति से धन कमाने और सदुद्देश्यों के लिएखर्च करने की प्रेरणा का दिन है यह सिद्धान्त सभी धर्मों में समान रूप से मान्य किया गया है और उसके समर्थन में हर धर्म में अनेक कथा, संस्मरण तथा शास्त्र वचन मौजूद हैं। दीपावली यदि हिन्दू धर्मानुयायी मना रहे हैं, तो उस आयोजन में मुसलमान—ईसाई आदि अन्य धर्मावलम्बी भी अपने सम्प्रदाय के संस्मरण इस भाव पवित्रता के सम्बन्ध में प्रस्तुत करने वाली बातें कह सकते

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हैं। इस प्रकार वे सर्व धर्म समन्वय के मंच भी बनाये जा सकते हैं। एक धर्म में दी गई श्रेष्ठ प्रेरणाओं को दूसरे धर्म वाले अपनी परम्पराओं के अनुसार प्रतिपादन करें तो इससे मूल लक्ष की रक्षा तो होती ही है, साथ ही अनेक दिशाओं से समर्थन मिलने पर उसके प्रति उपस्थित लोगों की श्रद्धा भी बढ़ेगी। सबसे बड़ी बात है कि अभी सम्प्रदाय भेद के कारण एक दूसरे के हर्षोत्सवों में भाग ले सकना सम्भव नहीं हो पाता, वह दीवारें टूटेंगी और कट्टरता के विषवृक्ष की जड़ें खोखली होती चली जायेंगी। धर्मों के मध्य एक दिशा और सहिष्णुता, सद्भावना तो सहज ही पैदा की जा सकती है। उसके लिये अन्य धर्मावलम्बी भी परस्पर मिल-जुल कर आयोजन बनाने की पृष्ठभूमि बना सकते हैं। यदि अपने धर्म द्वारा प्रस्तुत मंच के समर्थन में कुछ कहा जा सकता हो तब तो और भी उत्तम है। एक धर्म वाले दूसरे धर्म वालों को भी आमन्त्रित करें और उनके धर्म में प्रस्तुत आयोजन की भावना के समर्थन में जो कहा गया है उसे कहने के लिए आग्रह करें तो यह परम्परा पर्वों को सर्व-

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जनीय; सार्वभौम एवं मानवी संस्कृति के समर्थक के रूप में उपयोग हो सकती है।

लोक शिक्षण के लिए पर्व-त्योहारों की परम्परा के सहारे आज के लिए उपयोगी समाधान प्रस्तुत करना जितना सरल, सस्ता, आकर्षक और प्रभावोत्पादक है उतना कदाचित ही कोई अन्य माध्यम निकल सकता है, पर्व आयोजन के सम्बन्ध में प्रस्तुत अनगढ़पन को यदि सुव्यवस्थित बनाया जा सके तो उससे जागृति का—जन-मानस के परिष्कार का—लोक-शिक्षण का उद्देश्य भली-भाँति पूरा हो सकेगा।

माहेश्वरी प्रिण्टर्स बी॰५ इण्डस्ट्रियल ऐरिया; मथुरा।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

धर्म चेतना के विस्तरण के लिये, जनमानस के भावनात्मक परिष्कार के लिये–दूरदर्शी आर्यकालीन महामानव–हमारे पूर्वजों ने पर्व-त्योहारों की व्यवस्था की थी। इन्हें चिन्ह-पूजा न मानकर सत्प्रवृत्ति संवर्धन का एक प्रतीक मानकर चला जाय।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

युग निर्माण योजना
गायत्री तपोभूमि - मथुरा

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org